

क्र. सं.	प्रजाति	पकने की अवधि बोने के दिन से	उपयुक्त क्षेत्र	विशेष	पैदावार कुन्तल प्रति होवटेयन
1-	HD-2967	120-125	राजस्थान, हरियाणा, मध्यक, ३४३०, बिहार, दिल्ली, बंगाल, उत्तराखण्ड आदि के लिये उपयुक्त है	यह प्रवाति सबसे बीनी व नयी प्रवाति हैं, दाना गजैला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रवाति हैं।	55-60
2-	HD-2733	110-115	उद्यक्त, बिहार, संगान, आसाम, गुजरात, राजस्थान व माठ्या आदि के लिये उपसूक्त है ।	यह प्रजाति खाने में बहुत स्वादिष्ट है इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक है।	45-50
3.	UP-262	125-130	यह प्रजाति बिहार, पूर्वी 3090, बंगाल, झरखण्ड, व मैदानी भागों के लिये उपयुक्त है।	यह प्रवाति कम समय में अधिक पैदावार व खाने में स्वादिष्ट होता है । भूसे को मात्रा अधिक है ।	45-50
4-	PBW-154	135-140	यह पंजाब, हरियामा, समस्त 3090 बिहार व बंगाल के मैदानी भागों के लिये उपपुत्रत है।	यह प्रजाति खाने में व पैदावार में बहुत उपयुक्त है । केबी के लिये अवरोधी है ।	50-55
5.	PBW-226	100-115	वह पंजब, इरियाण, समस्त 2010, बिहर के मैदानी भागों के लिये उपयुक्त है।	कम समय में पैदा होने वाली व खाने में बहुत उपगुस्त है । भूस अधिक, दाना गर्दाला व तरबारी होता है ।	45-50
6-	PBW-343	130-140	यह पंत्राव, हरिवाण, समल २०९०, विहार झारखंड, बंगाल, आसम आदि के लिये उत्पृक्त हैं ।	यह प्रजाति खाने व पैदावार के हिसाब से बहुत बेहतर है ।	55-60
7-	PBW-373	120-125	उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, उत्तरांखण्ड, मध्यक्ष, झारखंड, आसाम आदि के लिये उपयुक्ता है ।	यह प्रजाति देरी से बुवाई में अधिक पैदाबार देती है ।	55-60
8-	UP-2425	120-130	पूर्वी ४८९०, बिहर, बंगल, उत्तराखण्ड आदि इलाकों के लिये उपयुक्त है ।	इसका दाना लम्बा व मोटा औसत पैदावार वाली प्रजाति है ।	45-50
9.	PBW-502	130-135	दिल्ली, पंताब, हरियाणा, ३८९६), बिहर, बंगाल, आसम, मध्यक, आदि के लिये उपयुक्त है ।	भारत वर्ष की नई व अधिक पैदावार वाली बीनी प्रवाति है	55-60
10-	WH-711	120-125	राजस्थान, इरियाणा, २०३०, ३०३०, बिहरा, दिल्ली, उत्तरांखण्ड बंगाल आदि के लिये उपयुक्त हैं	सबसे बीनी प्रजाति है, दाना गठीला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रजाति है।	55-60
11-	DBW-303 (Karan Vaishnavi)	115-120	राजस्थान, हरियाणा, मध्यध, खत्रध, बिहार, दिस्सी, उत्तरांखण्ड, बंगाल आदि के लिये उपश्र <sup>क्षा है</sup>	यह सबसे नयी प्रजाति है, दाना गठीला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रजाति है।	55-60
12-	DBW-187	120-125	राजस्थान, इतियाणा, मध्यक, उद्यक्ष, बिहर, दिलली, उसरोखण्ड, बंगाल आदि के लिये उपवृक्त हैं	यह बीनी व नवी प्रजाति है. दाना गतीला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रजाति है।	55-60

खोत की तैयारी !- में हूं सामान्य का से खरील फारतारी तीया महत्वा, आहु, प्यार, तोवायित, महत्व आदि के बाद सीचा जाता है। मुंदू सी खेती के लिये दोम्पर मिट्टी शर्वाचित्त सेती है। पिछली समान्य की कराई के बाद मिट्टी शरूटाने यादित इस से चुनाई कर के बेल या ट्रेक्टर से वो तीन बाद रिकेट और पूछा ने दीन शाहिर आंकाई के समय खेता में खारतवार नहीं सीची शाहिर भूषि में में मी पार्यवार मान्या में ही आदित मिट्टी इसी सुमार्थी मोलाहिर सिंधी सुमार्थी मोलाहिर सिंधी प्राप्त कर असानी से खेलीय राज्यां है तक पहुँच जाते, सीजों के अच्छे अंकुएण के लिये बोने से पहले ही एक सिंबाई (पलेशा) कर देना बाहिर गर्दे के छोटे गोर को सीमान्य मिट्टी के अच्ये की हो सहसे है कि स्वार्ग के लिए मूर्ग में तोकाई से स्वत्य पिड़ाई पहले पहले होता है जा है जा है कि साम की मिट्टी के अच्ये की हो से बाता के लिए मूर्ग में तोकाई से

उर्वतंक्क :— यदि सम्मय हो तो मिन्दी की जीब के आधार पर ही उर्वतंक को निद्धी में मिलाये। सिंतिय व समय वो बोर्ड फरसल में मार्ड्ट्रोजन 80 से 120 किलोग्राम, जास्कोरल 40 से 50 किलोग्राम तथा घोटाब 40 किलोग्राम पार्टी हम्प्टेंट्य की दर से मिलाये। सिंतिय तथा वेर से बोर्ड फरसल में मार्ड्ट्रोजन, फारकोरत की मात्रा को बुख कम कर दो फिर सीड ट्रिक परना प्रात आधा मार्ड्टाजन पूर्व फरमेंद्रा को प्रोटा को बोर्ड हम सो हम हमें हमें कर मा साहिए। बोर्ज का समय :- जल्बी पकने वाली फसल को नवम्बर के पहले पखवाई से, मध्यम पकने वाली किस्मों को नवम्बर के द्वितीय पखवाई से दिसम्बर के सुरू तत वह वाबा देर से पतने वाली किस्मों को दिसम्बर के अन्त तक बो सकते हैं। गेहें की बोआई का समय वातावरण के तापमान पर मी निर्मर करता है। गेहें के जीवत जमाव के लिये 20°C से अधिक 12°C से कम नहीं होना चाहिए।

बीज की आभा :- साधारणात्मा प्रति हेलटेमर 100 किलोग्रम मीज पर्मान होता है। इससे अधिक मात्रा में बीज अलने पर भी जरन जो कहें दृष्टिन मेहें होते हैं। परन्तु दिसम्बर के अन्त में बोते समय बीज की मात्रा बढ़ाकर 125 कि जा. पति हेलटेमर कर देना चाहिए। यदि बीज पूर्व में उपचारित न हो ते कर देरे प्राम बाहुरण प्रति हिंदा जा. की दर से उपचारित कर देना चाहिए। कि.ट. जहं नीहरू के बीज पूर्वम्ब प्रचारित होते हैं।

वीज की बोजाई :- गेहूं की बोआई में पंक्ति की वूरी 20-25 से मी बीज की गहराई 5 से मी. तक रहनी चाहिए। बोआई के समय भूमि में नमी की उचित मात्रा होने से अंकुरण समान रूप से होता है।

सिंचाई :- पहली सिंचाई मुख्य जब आरम्भ होने के समय 10 दिन के अन्वर, वृसरी सिंचाई करले फूटने के समय इआई से 40-45 दिन बाद, तीसरी सिंचाई गांठे पढ़ने पर 70-75 दिन बाद, चौथी सिंचाई फल